अध्याय 11

सोपर का पहला भाषण

सोपर तीनों मित्रों में से बोलने वाला अंतिम था। इसके अलावा वह सबसे छोटा भी होगा।[1] सोपर के विषय में जो भी पता है वह उसके दो भाषणों से ही अनुमान लगाना होगा। जेम्स स्ट्राहन ने सोपर को ''पक्का रूढ़ीवादी कट्टर'' नाम दिया है।[2] एक और विद्वान ने कहा कि सोपर में करुणा की कोई बात नहीं है: ''सोपर की कठोरतापूर्वक नापसंदगी से पता चलता है कि उसने अय्यूब के मन को कितना कम सुना। उसकी कठोर डांट से पता चलता है कि उसने अय्यूब के दर्द को कितना कम समझा।''[3] होमेर हेली ने इसमें जोड़ा है कि सोपर का मन ''हठी, कठोर, निर्दय और अनुचित रूप से आरोप लगाने वाला है।''[4]

सोपर को एलीपज की तरह, न तो रात का दर्शन, न बिलदद की तरह पुरखाओं की सीख की आवश्यकता थी। वह अय्यूब के सम्बन्ध में अपने स्वयं के विचारों से आश्वस्त था। उसके पहले भाषण को डांट, परमेश्वर के न्याय की सफाई में और उसकी अपनी सलाह माना जाता है।

अय्यूब को उसके अहंकार के लिए डांट लगाई (11:1-6)

[1]तब नामाती सोपर ने कहा, [2]''बहुत सी बातें जो कही गई हैं, क्या उनका उत्तर देना न चाहिये? क्या बकवादी मनुष्य धर्मी ठहराया जाए? [3]क्या तेरे बड़े बोल के कारण लोग चुप रहें, और जब तू ठट्ठा करता है, तो क्या कोई तुझे लज्जित न करे? [4]तू तो यह कहता है, 'मेरा सिद्धान्त शुद्ध है और मैं परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र हूँ।' [5]परन्तु भला हो कि परमेश्वर स्वयं बातें करे, और तेरे विरुद्ध मुँह खोले, [6]और तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रगट करे, कि उनका मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर है। इसलिये जान ले कि परमेश्वर तेरे अधर्म में से बहुत कुछ भूल जाता है।''

आयतें 1-3. चार प्रश्नों से अय्यूब पर सोपर का आक्रमण होता है। इन सभी प्रश्नों में नकारात्मक उत्तर की उम्मीद की जाती है। **धर्मी ठहराया जाए** (*tsadeq, सेडेक़*) शब्द का अनुवाद ''विमुक्त'' भी हो सकता है। **ठट्ठा** (*bad, बाड*) का अर्थ है ''बिना सोचे समझे बोलना, घमण्ड करना,'' विशेषकर काल्पनिक बहानों या दावों के विचार के कारण।[5] यह उस व्यक्ति का विवरण है जो उतावलेपन से और बेअदबी से बात करता है।[6]

आयत 4. ''तू तो यह कहता है, 'मेरा सिद्धान्त शुद्ध है और मैं परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र हूँ।''' पाठक को ये शब्द अय्यूब के मुंह से ढूंढ़े नहीं मिलेंगे। अय्यूब ने अपने जीवन के विवरण के लिए ''पवित्र'' (*zak, ज़ाक़*) शब्द का इस्तेमाल नहीं किया। बल्कि उसने ''निर्दोष'' (*tham, थाम*) शब्द को प्राथमिकता दी। NASB में इब्रानी शब्द का अनुवाद ''निर्दोष,'' ''दोष रहित'' और ''खराई'' के रूप में अलग-अलग किया गया है। ''निर्दोष'' होने के अय्यूब के दावे (9:20-22; 12:4; 31:6; NIV) परमेश्वर के अपने आकलन के साथ

मेल खाते हैं (1:1, 8; 2:3)। अय्यूब ने यह नहीं कहा कि वह पाप से मुक्त है; इसके बजाय उसने माना कि उसने ऐसा कोई पाप नहीं किया जिसकी सजा इतनी बड़ी हो।

आयत 5. सोपर की इच्छा थी कि यहोवा खुलकर अय्यूब को डांटे। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया इसलिए सोपर को लगा कि उसकी ओर से उसी को उसे डांट देना चाहिए!

आयत 6. परमेश्वर बात करता तो उसने अय्यूब को अपनी गलतियां दिखाने के लिए अपनी बातें प्रकट करनी थीं। **बुद्धि** (*chokmah, चोक्माह*) और **बुद्धि** (*thushiyyah, तुशियाह*) नीतिवचन में बार बार मिलने वाले ये दो शब्द हैं। अय्यूब की पुस्तक में नैतिक या धार्मिक समझ की बात करते हुए ''बुद्धि'' शब्द अठारह बार आता है (उदाहरण के लिए देखें 4:21; 12:2, 13; 28:12, 18, 20, 28)। ''बुद्धि'' के लिए दूसरा शब्द अय्यूब की पुस्तक में छह बार (5:12; 6:13; 11:6; 12:16; 26:3; 30:22) और पुराने नियम में कुल बारह बार मिलता है।

''इसलिये जान ले कि परमेश्वर तेरे अधर्म में से बहुत कुछ भूल जाता है।'' सोपर ने उसके मन में डाला कि अय्यूब को प्रसन्न होना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे उसके पाप के जितना दण्ड नहीं दिया।

अगम्य परमेश्वर (11:7-12)

[7]''क्या तू परमेश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जाँच सकता है? [8]वह आकाश सा ऊँचा है — तू क्या कर सकता है? वह अधोलोक से गहिरा है — तू क्या समझ सकता है? [9]उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है और समुद्र से चौड़ी है। [10]यदि परमेश्वर बीच से गुजरे, बन्दी बना ले, और अदालत में बुलाए, तो कौन उसको रोक सकता है। [11]क्योंकि वह पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है, और अनर्थ काम को देख कर क्या वह उस पर ध्यान न देगा? [12]परन्तु मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि होता है; क्योंकि मनुष्य जन्म ही से जंगली गदहे के बच्चे के समान होता है।''

आयतें 7-9. ''क्या तू परमेश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है?'' सोपर ने परमेश्वर को अगम्य, बल्कि समझ से बाहर बताया। परमेश्वर के स्वभाव को नापा नहीं जा सकता। क्योंकि **वह आकाश सा ऊँचा है, वह अधोलोक से गहिरा है** और **उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है और समुद्र से चौड़ी है**। जॉन ई. हार्टले ने खुलासा किया है, ''सृजित संसार, मनुष्य के लिए इसकी सीमाओं का पता लगाने के लिए बहुत बड़ा है, पर परमेश्वर के निवास के लिए बहुत छोटा है।''[7]

एच. एच. रोऊले ने लिखा है कि अय्यूब के मित्रों की बातें कई-कई जगहों पर सही हैं बेशक वे उन से गलत निष्कर्ष निकालते हैं, बिल्कुल वैसे जैसे अय्यूब अपने अनुभवों और थियोलॉजी से गलत निष्कर्ष निकालता है।[8] अय्यूब इन आयतों में अलंकारिक प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाया। वे उसे दीन बल्कि नीचा दिखाने के लिए थे। हेली ने सही कहा है, ''परमेश्वर को पूरी तरह से चाहे कोई नहीं जान सकता या जानता है, पर इस बात से उसे वह सब जानने के लिए जिसे वह जान सकता है चुनौती को स्वीकार करने से रुकना नहीं चाहिए।''[9]

आयत 10. ''यदि परमेश्वर बीच से गुजरे, बन्दी बना ले, और अदालत में बुलाए,

तो कौन उसको रोक सकता है?'' अन्य शब्दों में परमेश्वर किसी को जवाबदेह नहीं है! अन्य संस्करणों में इस आयत के रूपक को अधिक स्पष्टता से दिखाया गया है। NIV में है ''यदि वह आकर तुम्हें कैद में डाल दे, और कचहरी लगा ले, तो उसका विरोध कौन कर सकता है?'' NRSV में कहा गया है, ''यदि वह बीच में से गुजरे, और कैद कर ले और न्याय करने के लिए इकट्ठा करे, तो उसे कौन रोक सकता है?''

आयत 11. परमेश्वर का ज्ञान छानबीन पर आधारित नहीं है बल्कि यह तो उसके स्वभाव में ही निहित है। वह सारी मनुष्यजाति के **अनर्थ काम** से परिचित है।

आयत 12. ''परन्तु मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि होता है; क्योंकि मनुष्य जन्म ही से जंगली गदहे के बच्चे के समान होता है।'' हो सकता है कि यह अय्यूब के समय की कहावत हो। विचार यह है कि कोई भी मुनष्य अपने ही प्रयासों से बुद्धिमान नहीं हो सकता।

अय्यूब से पश्चात्ताप करने को कहा गया (11:13-20)

[13]''यदि तू अपना मन शुद्ध करे, और ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए, [14]और जो कोई अनर्थ काम तुझ से होता हो उसे दूर करे, और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे, [15]तब तो तू निश्चय अपना मुँह निष्कलंक दिखा सकेगा; और तू स्थिर होकर कभी न डरेगा। [16]तब तू अपना दुःख भूल जाएगा, तू उसे उस पानी के समान स्मरण करेगा जो बह गया हो। [17]और तेरा जीवन दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा; और चाहे अन्धेरा भी हो तौभी वह भोर सा हो जाएगा। [18]तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय रहेगा; और अपने चारों ओर देख देखकर तू निर्भय विश्राम कर सकेगा। [19]जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे डराएगा नहीं; और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे। [20]परन्तु दुष्ट लोगों की आँखें धुँधली पड़ जाएँगी, और उन्हें कोई शरणस्थान न मिलेगा और उनकी आशा यही होगी कि प्राण निकल जाए।''

आयतें 13, 14. सोपर ने अय्यूब को परिकल्पित कृदंत *'im* (*इम*) के इस्तेमाल के द्वारा मन फिराने के लिए समझाया, जिसका अनुवाद इन दोनों आयतों के आरम्भ में **यदि** किया गया है। सोपर यह मान कर चल रहा था कि अय्यूब ने अपने मन को परमेश्वर से दूर कर लिया है और यह कि उसकी समस्याओं का कारण उसका कोई **अनर्थ काम** था। यदि अय्यूब अपने से **उसे दूर करे** तो वह परमेश्वर की आशिषें पाने के लिए तैयार होना था।

''और ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए।'' प्रार्थनाओं और निवेदन में परमेश्वर के सामने प्रार्थना के लिए अपने हाथ उठाने के लिए है (निर्गमन 9:33; 1 राजाओं 8:22, 38; एज्रा 9:5; भजन संहिता 88:9; 143:6; यशायाह 1:15; 1 तीमुथियुस 2:8)।

''और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे'' डेरे का सरदार अपने ''डेरों'' यानी अपने परिवार और अपने अधीन में अन्य लोगों में होने वाली हर बात के लिए ज़िम्मेदार होता था।

आयतें 15-19. सोपर ने वे दस लाभ गिनाए जो अय्यूब को उन शर्तों को मानने पर मिलने थे जिनका दावा उसने पिछली आयतों में किया। ये आशिषें चाहे धर्मियों को ही मिलती हैं पर सोपर की बुनियादी सोच गलत थी। वह यह नहीं समझ पाया कि कई बार अच्छे लोगों को बहुत

बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है और आवश्यक नहीं कि दु:ख किसी के अपने पाप के कारण ही हो।

आयत 20. ''परन्तु दुष्ट लोगों की आँखें धुँधली पड़ जाएँगी, और उन्हें कोई शरणस्थान न मिलेगा और उनकी आशा यही होगी कि प्राण निकल जाए।'' हार्टले ने कहा कि ''यह स्पष्ट है कि यह निष्कर्ष निकालते हुए अय्यूब का कष्ट उसके किसी गुप्त पाप का कारण था, सोपर ने हरजाने की शिक्षा के तर्क में अपना अंतिम कदम रख दिया है। उसके लिए इसका अर्थ है कि अय्यूब का दु:ख उसके किए का बदला है।''[10] इसलिए अय्यूब के लिए एक ही उपाय था कि या तो वह मन फिराए या मर जाए।

प्रासंगिकता

सोपर वाली सोच (अध्याय 11)

अध्याय 11 में अय्यूब के तीसरे मित्र सोपर ने बात की। अन्य दो मित्रों की तरह सोपर ने भी अय्यूब की शारीरिक पीड़ा, उसकी मनोव्यथा और उसकी भावनात्मक वेदना को देखा। अन्य दोनों मित्रों की तरह, अय्यूब के साथ रोने और उसे अपना बोझ उठाने में सहायता करने के बजाय, सोपर ने उसे उपदेश देने का निर्णय लिया। अय्यूब के लिए की जाने वाली अंतिम बात कठोर, उदासीन, संवेदनाहीन, इल्ज़ाम लगाने वाला उपदेश था, विशेषकर इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अय्यूब दयनीय, तरस योग, परेशान और शोक में राख के ढेर पर बैठा था। अपने परेशान, ज़रूरतमंद दोस्त के साथ बात करने में सोपर जैसा दोस्त बेरहम क्यों हो गया? उसका उपदेश ऐसी सोच से निकला था जिसे हम सोपर की सोच कहेंगे। मसीही लोगों के रूप में हमें मसीह का सा मन या सोच रखने को कहा गया है (फिलिप्पियों 2:5)। आइए 2 कुरिन्थियों 13:5 वाला व्यवहार लाएं और यह सुनिश्चित करने के लिए हम अपने आपको ''जांचें'' कि हमारे अंदर कभी सोपर वाली सोच न हो।

सोपर वाली सोच असंवेदनशील और रूखी है। बिलदद को दिए अय्यूब के उत्तर को सुनने के बाद अंत में सोपर बोला। करुणामय और दयालु होने के बजाय वह असंवेदनशील, कठोर, निर्दयी और बेरहम था। सोपर क्रोध से भरा हुआ भी लगता है। सोपर ने कठोरता से अपने मित्र अय्यूब को ''बहुत सी बातें'' करने वाले के साथ-साथ ''बकवादी'' भी कहा (11:2)। उसने अय्यूब को चार अलंकारिक प्रश्न पूछते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से अपने मित्र की निंदा की (11:2, 3), जिसमें हर प्रश्न में यह संकेत है कि अपने ऊपर इस विपत्तियों को लाने के लिए दोषी अय्यूब ही था। क्या आप किसी मित्र के साथ इतने असंवेदनशील होने की कल्पना कर सकते हैं जो शोक में पड़ा हो और दर्द से कराह रहा हो? कठोरचित व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है।

सोपर वाली सोच अपने आप में धर्मी होने और अहंकार वाली है। सोपर को अपने नज़रिए के सही होने का इतना यकीन था कि उसने अहंकारपूर्वक अय्यूब की पिछली टिप्पणियों को ''बड़े बोल'' कह दिया (11:3)। सोपर ने उसके मन में यह बिठा दिया कि अय्यूब को लगता था कि उसकी टिप्पणियां अटूट हैं। परन्तु सोपर इतना अहंकारी था कि उसने उनका खण्डन करने का प्रयास किया। सोपर ने न केवल अय्यूब की टिप्पणियों का खण्डन ही करना था बल्कि उसने अपने मित्र को ''लज्जित'' भी करना था (11:3)। जिस हालत में अय्यूब था उसमें सचमुच में

उसे डांटने या उसकी बात को काटने की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु अपने आप में धर्मी सोपर की सोच वाला व्यक्ति ऐसा ही करेगा। सोपर ने अहंकारपूर्वक यह मान लिया कि यदि परमेश्वर अय्यूब से सीधे बात करता है तो परमेश्वर उसके ''विरुद्ध मुंह खोले [गा]'' (11:5)।

सोपर की सोच सब कुछ जानने वाली सोच है। आयत 12 में ''निर्बुद्धि'' शब्द का इस्तेमाल करके सोपर ने अपने विश्वास को जताया कि अय्यूब परमेश्वर के मार्गों से अनजान था। इसके विपरीत अय्यूब ''खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था'' (1:1)। अय्यूब एक ऐसा व्यक्ति था जो ''बड़े भोर को उठकर'' अपने बच्चों के लिए ''होम बलि चढ़ाता था'' (1:5)। अय्यूब परमेश्वर के मार्गों से अनजान नहीं था; उसे बस यह समझ नहीं आ रही थी कि उसके ऊपर ये विपत्तियां क्यों आन पड़ी हैं। परन्तु सोपर को लगा कि उसे मालूम है कि अय्यूब के साथ ये सब क्यों हुआ है। सोपर ने कहा कि काश परमेश्वर ''स्वयं बातें करें, और [अय्यूब के] विरुद्ध मुंह खोले, और [उस] पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रकट करे'' (11:5, 6)। फिर सोपर ने अय्यूब से पूछा, ''क्या तू परमेश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जाँच सकता है?'' (11:7)। सोपर यह मानने में सही था कि परमेश्वर की महानता को कोई नहीं पा सकता। फिर भी दूसरों को नीचा दिखाने वाले व्यवहार के एक तरीके से सोपर ने यह मान लिया कि उसे परमेश्वर की खूबी, व्यवहार और मार्गों के विषय में अय्यूब को सिखाना चाहिए था (11:8–11)। सोपर जैसी सोच वालों को आम तौर पर लगता है कि समझाई न जा सकने वाली बात को समझाया जाए।

सोपर वाली सोच दोष लगाने वाली मानसिकता से भरी है। आयत 11 में सोपर ने अय्यूब का निर्णय कर दिया जब उसने ये बातें कहीं, ''क्योंकि वह पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है, और अनर्थ काम को देख कर क्या वह उस पर ध्यान न देगा?'' सोपर ने अपने मन में यह ठान लिया था कि अय्यूब दोषी है। जैसे हम ने पहले कहा था कि इसके बाद सोपर ने अय्यूब की तुलना एक ''निर्बुद्धि'' से की और यह संकेत दिया कि अय्यूब के समझदार बनने का कोई तरीका नहीं था (11:12)। सोपर ने उदाहरण (लोकोक्ति) के साथ यह दावा करने का प्रयास किया कि ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे जंगली गधा मनुष्य को जन्म दे सके। क्या आप अय्यूब की जगह होने पर यह सब सुनने की कल्पना कर सकते हैं? अय्यूब बीमार, दु:खी, परेशान और शोक में डूबा था और उसके मित्र ने उस पर दोष लगाते हुए उसे जवाब दिया। सोपर ने कहा, ''यदि तू अपना मन शुद्ध करे, ... तब तो तू निश्चय अपना मुँह निष्कलंक दिखा सकेगा; और तू स्थिर होकर कभी न डरेगा'' (11:13–15)। सोपर का विश्वास था कि अय्यूब किसी गुप्त पाप का दोषी है। यदि अय्यूब केवल इतना मान ले और शुद्ध हो जाए तो उसे चैन, नींद और उम्मीद मिल सकती थी (11:15–19)। सोपर ने अपने उपदेश को एक चेतावनी के साथ समाप्त किया। ''परन्तु दुष्ट लोगों की आँखें धुँधली पड़ जाएँगी, और उन्हें कोई शरणस्थान न मिलेगा और उनकी आशा यही होगी कि प्राण निकल जाएं'' (11:20)। अय्यूब को ऐसे किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं थी। अय्यूब को एक मित्र, समर्थन, प्रोत्साहन और सहानुभूति रखने वाले कान की आवश्यकता थी।

सारांश। सोपर वाली सोच अपने आप में धर्मी होने, असंवेदनशील, दूसरों को नीचा दिखाने वाली और दोष लगाने वाली है। अफ़सोस की बात है कि संसार सोपर जैसे बेदर्द, निर्मोही लोगों

से भरा पड़ा है। मेरी प्रार्थना है कि सोपर वाली सोच मसीह की बहुमूल्य दुल्हन, कलीसिया में न चली जाए। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]*परिचय* में पृष्ठ 13 पर सोपर का चरित्र-चित्रण देखें। [2]जेम्स स्ट्राहन, द *बुक ऑफ़ अय्यूब* (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1913), 110. [3]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 156. [4]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 109. [5]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:109. [6]एंडरसन, 157. [7]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 198. [8]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 107-8. [9]हेली, 111. [10]हार्टले, 204.